International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
Volume-6, Issue-2, March-April – 2019
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

दामोदर लाल मीना

सह आचार्य हिन्दी राजकीय महाविद्यालय

करौली राजस्थान

सार

व्यक्ति को प्रभावित करने वाली सामाजिक संस्थाओं में सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था परिवार है। परिवार के अतिरिक्त व्यक्ति पर प्राथमिक प्रभाव डालने वाली अन्य संस्थाओं में व्यवसाय, शैक्षणिक संस्थान, समूह धर्म, राजनैतिक दल और राष्ट्र को गिना जा सकता है। ये संस्थायें व्यक्तित्व पर तीन प्रकार से प्रभाव डालती हैं। एक तो इनके द्वारा विशिष्ट प्रकार के चरित्र या व्यक्तित्व उत्पन्न करने का प्रयास हो सकता है। दूसरे, परिस्थितियाँ ऐसे प्रभाव उत्पन्न कर सकती हैं जिन्हें उत्पन्न करना समाज अथवा संस्थाओं का लक्ष्य नहीं था ।

कुंजीशब्द *व्यवहार , आत्मविश्वास , परिपक्वता , शैक्षिक , उपलब्धियों*

परिचय

मानव विकास के इतिहास में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। मानव अपने जन्म–काल में असहाय होता है, उसे जीवित रहने के लिए समायोजन की आवश्यकता होती है। समायोजन की इस प्रक्रिया में इसका सीखना प्रारम्भ होता है। सीखने की यह प्रक्रिया बालक के जन्म लेते ही प्रारम्भ हो जाती है और जीवन –पर्यन्त चलती रहती है। सर्व प्रथम बालक की शिक्षा का कार्य माता की गोद से प्रारम्भ होता है। इस प्रकार माँ प्रथम शिक्षिका होती है। माता के साथ–साथ बालक पिता के सम्पर्क में आता है। पिता भी उसके सीखने के कार्य में योगदान देता है। इस प्रकार धीरे–धीरे शिक्षा कार्य का दायित्व पूरे परिवार का हो जाता है। जब सामाजिक ढाँचे का निर्माण हुआ तो शिक्षा कार्य समाज का महत्वपूर्ण अंग बन गया। समाज द्वारा शिक्षा प्रदान करने का दायित्व समाज के कुछ विशिष्ट व्यक्तियों को दिया गया जिन्हें शिक्षक अथवा अध्यापक कहा जाने लगा। शिक्षा ग्रहण करने वाले व्यक्ति को विद्यार्थी अथवा छात्र कहा गया है। विद्यार्थी सुयोग्य अध्यापकों के पथ–प्रदर्शन में ही अपने श्रेष्ठतम् विकास को प्राप्त करता है। शिक्षार्थी बहुत कुछ अध्यापकों के व्यवहारों एवं आदर्शों के अनुकरण द्वारा भी सीखते हैं। इस प्रकार देश और काल के अनुरूप बालकों को शिक्षा प्रदान कर अध्यापक उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे भविष्य में राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका का उचित निर्वाह कर सकें।

शिक्षा

शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति के चिंतन, चरित्र तथा व्यवहार में परिष्कृत दृष्टिकोण का विकास किया जाता है। जिसके द्वारा एक ऐसी पृष्ठ भूमि तैयार होती है। जो किसी भी कार्य के तार्किक परिणामों द्वारा परम्परागत दृष्टिकोण को बदलने के लिए अभिप्रेरणा प्रदान करती है। प्रत्येक मानव सभ्यता के विकास में शिक्षा आधारभूत आवश्यकता मानी जाती है। क्योंकि शिक्षा व्यक्ति में अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्वता, सोच में वैज्ञानिकता और प्रयोग में सृजनात्मकता का बीजारोपण करती है। जिससे वह अपने समाज और राष्ट्र का उपयोगी नागरिक बन जाता है। इस तत्व को डी0एस0 कोठारी महोदय ने अपने प्रतिवेदन में इन शब्दों में अंकित किया है– ष्देश की आंकाक्षाओं की प्राप्ति उसके समस्त जनों के ज्ञान,कौशल हितों और मूल्यों में निहित है। यदि बिना किसी हिंसात्मक क्रान्ति के बड़े पैमाने पर परिवर्तन करना है तो केवल एक ही साधन है और वह है शिक्षा।[2]

सामाजिक न्याय और लोकतन्त्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा सुलभ हो। लोकतंत्र का आधार शिक्षा और शिक्षित नागरिक होते हैं। जो चुनाव करते हैं और जिनको चुना जाता है। शिक्षा के अभाव में नागरिक अपने कर्तव्यों तथा अधिकारों से अनभिज्ञ रहता है। प्रजा तांत्रिक जीवन को अंगीकार किये हुए व्यक्ति का निर्माण शिक्षा द्वारा ही सम्भव है भारत की एक तिहाई जनसंख्या निरक्षर है। निरक्षर जनसंख्या अंधविश्वास एवं रूढ़िवादिता में फंसकर ही अपना जीवन व्यर्थ व्यतीत कर देती है। उनके जीवन के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए विकास क्रम में उनको जोड़ने के लिए शिक्षा का सार्वभौमीकरण आवश्यक है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण के पश्चात् ही गरीब जनता को शिक्षित कर पाना सम्भव है। क्योंकि शिक्षा एक ऐसी मशाल है जो आने वाली पीढ़ी की शिक्षा तय करके उसे प्रकाशमान बनाने में उसकी मदद करती है। प्रत्येक बच्चे के मौलिक हित को ध्यान में रखकर शिक्षा सुलभ करना सामाजिक तथा आर्थिक प्रगति को ओर इंगित करता है।

अतएव वर्तमान समय में सारे देश का शैक्षिक जगत इस प्रयास में रुचि ले रहा है कि शिक्षा सम्बन्धी नवीन नीति निर्धारित की जाय । इस नयी नीति में विशेष ध्यान बालक के व्यक्तित्व पर केन्द्रित किया जाना चाहिए। चूँकि आज के बालक में ही कल के सुन्दर व स्वस्थ समाज के बीज निहित होते हैं इसलिए बालक का विद्यार्थी जीवन में सुयोग्य, संयमी, सदाचारी, चरित्रवान, सामाजिक रूप से परिपक्व तथा आत्मविश्वास से युक्त होना आवश्यक है यदि देश के भावी नागरिक इन गुणों से युक्त नहीं हैं तो वर्तमान समस्याओं का वैज्ञानिक निराकरण सम्भव नहीं होगा।

अध्ययन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा में सैद्वान्तिक अस्पष्टता का भी दोष पाया जाता है। सभी देशों में सामान्य शिक्षा का उद्देश्य बालकों को उन प्रविधियों से अवगत कराना है, जिससे की उन्हें आगे की शिक्षा प्राप्त करने में सुगमता हो तथा अपने वातावरण के उत्तरदायित्वों को समझने तथा जीवन निर्वहन करने के योग्य बनाना है। इसके उपरान्त माध्यमिक शिक्षा पूर्ण रूप से विशिष्ट होती है। इसके विशिष्ट होने के दो प्रधान कारण हैं पहला यह है कि माध्यमिक शिक्षा छात्रों को मध्यम् स्तर के व्यवसायों के योग्य बनाती है और दूसरे यह है कि माध्यमिक स्तर पर छात्र उन विधियों, प्रविधियों तथा उपकरणों को समझ जाता है जिनका उपयोग वह उच्च शिक्षा के लिए करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सामान्य शिक्षा समाजोन्मुखी होती है और व्यवसायिक शिक्षा व्यवसायोन्मुखी किन्तु हमारे देश में माध्यमिक शिक्षा न तो छात्रों को व्यवसायिक जीवन के लिए तैयार करती है और न उन्हें उच्च शिक्षा के लिए ही सक्षम बनाती है। यह एक अजीब घाल–मेल की स्थित में पड़ी हुई है। अतएव स्पष्ट शब्दों में यह कहा जा सकता हैं कि माध्यमिक शिक्षा का सामंजस्य उच्च तथा व्यवसायिक शिक्षा से तब तक सम्भव नहीं हो सकता है, जब तक की इसे स्वतंत्र इकाई के रूप में स्वीकार करते हुए इसकी प्रकृति को मनोवैज्ञानिक नियमों सिद्वान्तों के अनुरूप ढाला नहीं जायेगा।

व्यक्तित्व की विषेषताएँ

- सामंजस्यता – व्यक्तित्व की तीसरी विषेषता है – सामंजस्यता। व्यक्ति को न केवल बाह्य वातावरण से वरन् अपने स्वयं के आंतरिक जीवन से भी सामंजस्य करना पड़ता है। सामंजस्य करने के कारण उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है और फलस्वरूप उसके व्यक्तित्व में विभिन्नता दृष्टिगोचर होती है। यही कारण है कि चोर, डाकिये, डॉक्टर आदि के व्यवहार और व्यक्तित्व में अंतर मिलता है।

- निर्देषित लक्ष्य प्राप्ति – व्यक्तित्व की चौथी विषेषता है – निर्देषित लक्ष्य प्राप्ति। मानव के व्यवहार का सदैव एक निष्चित उद्देष्य होता है और वह सदैव किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संचालित किया जाता है।

व्यक्तित्व के गुण

व्यक्तित्व के गुणों का विश्लेषण सर्वप्रथम आलपोर्ट (1937) ने किया उसने अंग्रेजी शब्दकोष से व्यक्तित्व संबंधी 17953 शब्द ढूंढे उनमें से 4500 शब्दों को पुनः छांटा, ये शब्द व्यक्तित्व के गुणों के द्योतक थे।

आलपोर्ट के पश्चात् कैटल (1950) ने व्यक्तित्व के गुणों के 171 पुनः 35 और अंत में 12 विभाग किये।

- चक्रविक्षिप्त – यह व्यक्ति स्पष्ट, भावुक तथा अपने विचारों की स्पष्टतः
- अभिव्यक्ति करने वाला होता है।
- सामान्य मानसिक शक्ति – यह सामान्य स्तरीय बुद्धिमान होता है।
- प्रषासक – यह व्यक्ति आत्म विष्वासी तथा झगडालू होते हैं।
- प्रसन्नमुख – इसमें आत्म–विश्वास, हर्ष, बुद्धि आदि वे सभी गुण विद्यमान होते हैं जो प्रसन्नचित होने में सहायक होते हैं।

परिपक्वता

परिपक्वता के कारण ही विकास की एक निश्चित अवस्था में बच्चे के कार्य करने के योग्य हो जाते हैं जो उससे पूर्व करने में समर्थ नहीं होते । परिपक्वता और सीखने की क्रिया में घनिष्ठ सम्बन्ध है। जैसे–जैसे बालक का शरीर परिपक्वता की ओर बढ़ता जाता है, वह अन्तर्निहित शक्तियों का प्रयोग करने लगता है।

उसके व्यवहार में परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तन के लिए शारीरिक मांसपेशीय, गामक तथा मानसिक परिपक्वता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार परिपक्वता का तात्पर्य उस अभिवृद्धि और विकास से है जो किसी विशेष प्रकार के व्यवहार को सीखने के पहले आवश्यक होता है। परिपक्वता एक शब्द के रूप में साधारणतयः दो अर्थों में प्रयोग की जाती है। प्रथमतः उस बर्ताव के सम्बन्ध में जो परिपक्वता के आदर्श एवं उसकी उम्मीद को अनुकूल बनाता है। और द्वितीय उस बर्ताव के सम्बन्ध में जा निरीक्षण तहत व्यक्ति की उम्र के लिए उचित है। मनोवैज्ञानिक साधारणता परिपक्वता को द्वितीय अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। परिपक्वता के तीन प्रकार होते हैं।

सामाजिक परिपक्वता

Social Maturity विकास एक बहुमुखी प्रक्रिया है इसमें बहुत सी बातों का समावेश होता है। विकास के क्रम के बालक का बौद्धिक पक्ष ही नहीं शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा संवेगात्मक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। विकास के यह सभी पक्ष परस्पर सम्बन्धित हैं। परिपक्वता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ बालक न केवल शारीरिक बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता की थाती प्राप्त होती है। समाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृत के साथ अदल–बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। जो कुछ चीजों को स्वीकृत एवं कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृत को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देता है।

सामाजिक उन्नति का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से है। इसको इस प्रकार प्रभावित किया गया है, ष्वह प्रक्रिया जिसके द्वारा वृहद श्रेणी के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक बर्ताव का मार्ग दिखलाता है जो कि बहुत ही सकरी श्रेणी के अन्दर सीमित है। वह श्रेणी जो व्यक्ति के समुदाय के आदर्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने के योग्य है।[12]

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास हमारी प्रगति पर प्रभाव डालता है। यह हमारी अभिप्रेरणा, प्रत्यक्षीकरण और विचार प्रक्रिया को टक्कर देता है। अनुसंधानों के परिणामों से स्पष्ट है और उच्च–कार्य की अभिप्रेरणा पर प्रशासन द्वारा किये गये निरीक्षण में दिखायी देने वाला परिणाम उच्च आत्मविश्वास का एक समवायी है। भय एवं चिन्ता हमें तैयार करने के लिए उपयोगी अभिप्रेरक हो सकते हैं, लेकिन प्रभावकारी संपादन प्रतीकात्मक रूप से एक ठंड़े दिमाग और स्थिर हाथ की मांग करता है। आत्म विश्वास हमें यह विश्वास करने में मद्द करता है कि जैसे–जैसे हमारा भय और हमारे लिए धमकियां बढ़ेंगी हम उन्हें संभालने के

योग्य होंगे। अनुसंधान ने कई ऐसे तरीकों को दिखाया है जिसमें अधिक विश्वास रखने वाले लोग कम विश्वास रखने वाले लोगों से अलग सोचते हैं।

आत्मविश्वास हमारे संपादन को प्रभावित करता है, इसलिए हम यह कह सकते हैं कि आत्मविश्वास और शैक्षिक (निष्पत्ति) के मध्य महत्वपूर्ण सह–सम्बन्ध है।

स्व अवधारणा और शिक्षा

पहले के समय में। नालंदा, तक्षशिला, वाराणसी, वे स्थान थे जहाँ हजारों छात्र आ रहे थे। ज्ञान और आत्म–बोध क्योंकि शिक्षा को आध्यात्मिक और भौतिक दोनों दृष्टि से मानव जाति की प्रगति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता था।

शिक्षा के उद्देश्य, तरीके और प्रक्रियाएं बदलते रहने की गति बनाए रखने के लिए निरंतर नवीनीकरण की स्थिति में हैं। समाज में मूल्य। नवीनीकरण की इस प्रक्रिया को तभी तेज किया जा सकता है जब नई वृद्धि हासिल की जा सके। जल्दी से व्यक्तियों में आत्म अवधारणा को बढ़ाने की आवश्यकता। जीवन की अवधि हर क्षेत्र में कार्य बल है। इन उद्देश्यों को तभी महसूस किया जा सकता है जब ... शिक्षा जीवंत, गतिशील, मौलिक और उत्पादक विचारकों का उत्पादन कर सकती है जो अपने रचनात्मक कार्यों के माध्यम से अपने जीवन को अधिक आरामदायक, सार्थक और स्वस्थ बनाने में सक्षम हैं।

शिक्षाविदों द्वारा यह स्वीकार किया जाता है कि हर स्तर पर प्रचलित शिक्षा की रूढ़िबद्ध व्यवस्था समाज में सामान्य रूप से और एक व्यक्तिगत शिक्षार्थी को अपरिवर्तनीय हानि का कारण बन रही है। औपचारिक शैक्षिक सेट–अप में हमारी गतिविधियों को निरपेक्ष, वर्क आउट और आउट डेटेड माना गया है। रचनात्मक दिमाग का निर्माण करने के बजाय वे 111–पचा के साथ हर चरण में शिक्षार्थियों के दिमाग को भर देते हैं। परीक्षा उत्तीर्ण करने के उद्देश्य से विचार। शायद, यह एक कारण हो सकता है शिक्षकों का। सभ्यता की वास्तविक उपलब्धि के लिए कुछ भी नया और ताजा योगदान करने में विफल।

शौक्षिक उपलब्धियों (Educational Achievement)

शैक्षिक **उपलब्धि** का अर्थ विद्यालय में एक विशेष प्रकार की उद्देश्यपरक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् बालक द्वारा विभिन्न विषयों में प्राप्त ज्ञान तथा अनुभव है साथ ही यह ज्ञान व अनुभव प्राप्ति की सीमा को भी दर्शाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक **उपलब्धियों** से तात्पर्य यह है कि एक विशेष प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने के बाद विद्यार्थी ने क्या सीखा है और उसकी मात्रा क्या है ?

शैक्षिक उपलब्धियों के उद्देश्य

शैक्षिक **उपलब्धियों** किसी भी बालक के सीखे गये ज्ञान व अनुभव की मात्रा को प्रकट करता है, उसके उद्देश्य निम्नांकित है –

* विद्यालय में विभिन्न कक्षाओं में पढ़ाये जाने वाले विषयों में विद्यार्थियों ने कितनी योग्यता प्राप्त की है।
* शिक्षकों के अध्यापन की सफलता का अनुमान लगाना।
* विद्यार्थियों का वर्गीकरण करने में सहायता देना।

शैक्षिक उपलब्धियों परीक्षण के प्रकार

1. निबन्धात्मक परीक्षण इस प्रकार की परीक्षाओं में विद्यार्थियों को निबन्ध के रूप में प्रश्नों का उत्तर देना होता है। इसमें परीक्षक के व्यक्तित्व से परीक्षा के अंक प्रभावित होने की सम्भावना रहती है।
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षण वस्तुनिष्ठ परीक्षा उस परीक्षा को कहते हैं, जिसमें विभिन्न परीक्षक उत्तर पुस्तिका को जाँचने के बाद एक ही प्रकार से समान उत्तरों के लिए समान अंक प्रदान करते हैं।

उपरोक्त वर्णन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि अपने जन्म के साथ शिशु न तो सामाजिक होता है और न असामाजिक। जैसे–जैसे उसकी आयु बढ़ती है उसमें सामाजिक गुण व सामाजिक उत्तरदायित्व बढ़ते जाते हैं। इस प्रकार वह सामाजिक प्राणी कहलाने लगता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने समाज, वातावरण, समय व परिस्थितियों से समायोजन करना होता है। इनमें समाज से व्यक्ति का समायोजन अति महत्वपूर्ण माना गया है। यही कारण है कि आज शारीरिक तथा बौद्धिक विकास के साथ–साथ सामाजिक विकास को भी महत्वपूर्ण समझा जाता है। वर्तमान में शिक्षा के उद्देश्यों के अन्तर्गत सामाजिक विकास को प्रमुखता दी जा रही है। क्रमानुसार सामाजिक कार्यों द्वारा जब बालक का सामाजिक विकास पूर्ण हो जाता है तो वह सामाजिक रूप से परिपक्व हो जाता है। सामाजिक रूप से परिपक्व बालक समाज में अपना समायोजन करने में सफल होते हैं। इसके साथ ही विद्यालयीय वातावरण से भी उनका समायोजन अति शीघ्र हो जाता है परिणामस्वरूप उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

किसी कार्य में संलग्न होने पर जब व्यक्ति को उसका अभीष्ट (लक्ष्य) प्राप्त नहीं हो पाता तो उसमें कुण्ठा का भाव जागृत होने लगता है। यही कुण्ठा अनेक प्रकार की नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों (डर, क्रोध, तनाव आदि) को उत्पन्न करता है जिससे उसका आत्मविश्वास व कार्य–शक्ति क्षीण होने लगती है जो स्वयं उसके तथा समाज हेतु घातक होती है। सामान्य रूप से कुण्ठा विपरीत शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक, पारिवारिक तथा आर्थिक कारणों से उत्पन्न होती है।

वर्तमान समय की बदलती परिस्थितियों में छात्र–छात्राएं बड़ी संख्या में विभिन्न कारणों से कुण्ठा के शिकार हो रहे हैं जिसके कारण उनके विकास एवं समायोजन में बाधा उत्पन्न होती है। अनुशासनहीनता की समस्या भी कुण्ठा के कारण उत्पन्न होती है। इन सबके परिणामस्वरूप छात्र–छात्राओं की शैक्षिक निष्पत्ति न्यून हो जाती है। अतः प्रस्तुत अनुसन्धान में इस बात पर ध्यान केन्द्रित किया जायेगा कि परिवार, समाज तथा विद्यालयों में छात्र–छात्राओं को किस प्रकार का सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण दिया जाय जिससे उनमें सामाजिक परिपक्वता एवं आत्मविश्वास का समुचित विकास हो सके तथा उनमें कुण्ठा न उत्पन्न हो।

अध्ययन के उद्देश्य

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर व्यक्तित्व, लिंग व क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

उपसंहार

1. विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व का सार्थक प्रभाव पाया गया। उच्च व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता निम्न व्यक्तित्व वाले विद्यार्थियों से अधिक पाई गयी।

2. विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर लिंग का सार्थक प्रभाव पाया गया। लड़कों की सामाजिक परिपक्वता लड़कियों की सामाजिक परिपक्वता से अधिक पाई गयी।

3. विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर क्षेत्र का सार्थक प्रभाव पाया गया। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता से अधिक पायी गयी

4. विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता के आयाम अंर्तवैयक्तिक पर्याप्तता, सामाजिक पर्याप्तता एवं कुल सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व ग लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया जबकि वैयक्तिक पर्याप्तता पर व्यक्तित्व ग लिंग का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। अंर्तवैयक्तिक पर्याप्तता एवं सामाजिक पर्याप्तता पर व्यक्तित्व ग क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया जबकि वैयक्तिक पर्याप्तता एवं कुल सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व ग क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया। सामाजिक परिपक्वता के सभी आयाम एवं कुल सामाजिक परिपक्वता पर लिंग ग क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक पाया गया। सामाजिक परिपक्वता के सभी आयामों एवं कुल सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व ग लिंग ग क्षेत्र का अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नहीं पाया गया।

5. विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता पर व्यक्तित्व के सभी दस आयाम, लिंग वक्षेत्र का मुख्य प्रभाव सार्थक पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अहमद, एस. एवं सिन्हा, आर. (2011)किषोरियों की शैक्षिक निष्पत्ति का विद्यालय के सामाजिक–सांवेगिक वातावरण से संबंध का अध्ययन, रिसर्च लिंक, जुलाई–दिसंबर, 32 (2), 55–61.

2. भटनागर, ए.बी., भटनागर, मिनाक्षी एवं भटनागर, अनुराग (2013). अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, विनय रखेजा प्रकाशन, मेरठ, 238.

3. भटनागर, सुरेश (2000). शिक्षण अधिगम एवं विकास का मनोविज्ञान, सूर्यापब्लिकेशन, मेरठ, चतुर्थ संस्करण, 84, 86.

4. भटनागर, सुरेश (2003). शिक्षा मनोविज्ञान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ,ग्यारहवाँ संस्करण, 311.

5. भार्गव, महेश एवं भार्गव, वीनू (2014). मानव विकास का मनोविज्ञान, एच.पी.भार्गव बुक हाउस, चतुर्थ संस्करण, 190, 191, 198.

6. दीक्षित, मिथिलेष कुमारी (1985). कक्षा 9वीं एव 11वीं में अध्ययनरत् बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. पी–एच.डी.षिक्षा, कानपुर विष्वविद्यालय.

7. फ्रांसिस, शांतिलता (2014). विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, पी–एच.डी.शोध प्रबंध, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, 229–230.

8. गुप्त, रामबाबू (1983). विकासात्मक मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान प्रकाशन, कानपुर, पंचम संस्करण, 57, 199, 215–217.

9. इग्नू (2015). विकास और अधिगम का मनोविज्ञान, नई दिल्ली, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय शिक्षा विद्यापीठ प्रकाशन,ै. 332ए ब्लॉक 2, 3, 4, 21–25,

10. 13–14, 29–31कपिल, एच.के. (2007). अनुसंधान विधियाँ, एच.पी.भार्गव बुक हाउस, आगरा, तेरहवाँ, संस्करण, 61, 397, 400.

11. मौर्य, मनोज कुमार (2013). शैक्षिक उपलब्धि मापनी (स्वनिर्मित उपकरण)पाठक, पी.डी. (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा – 2, अड़तीसवाँ संस्करण, 400, 401.

12. राव, नलिनी (1986). रॉस सामाजिक परिपक्वता मापनी, मैनुअल, नेशलन साइकोलॉजिकल कार्पोरेशन, 1–23.

13. राय, पारसनाथ (2006). अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, द्वादशम संस्सकरण, 108, 109, 286, 302, 306.